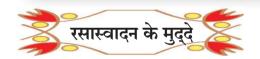
भावार्थ: पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ३०-३१: पाठ - बाल लीला - संत सूरदास

(१) यशोदा अपने पुत्र को चुप करने के लिए बार-बार समझाती है। वह कहती है - ''चंदा आओ! तुम्हें मेरा लाल बुला रहा है। यह मधु मेवा, पकवान, मिठाई स्वयं खाएगा और तुम्हें भी खिलाएगा। (मेरा लाल) तुम्हें हाथ में रखकर खेलेगा; तुम्हें जरा भी भूमि पर नहीं बिठाएगा।'' यशोदा हाथ में पानी का बर्तन उठाकर कहती है - ''चंद्रमा! तुम शरीर धारण कर आ जाओ।'' फिर उन्होंने जल का पात्र भूमि पर रख दिया और उसे दिखाने लगी - 'बेटा देखो! मैं वह चंद्रमा पकड़ लाई हूँ।' अब सूरदास के प्रभु श्रीकृष्ण हँस पड़े और मुस्कुराते हुए उस पात्र में बार-बार दोनों हाथ डालने लगे।

(२)
हे श्याम ! उठो, कलेवा (नाश्ता) कर लो । मैं मनमोहन के मुख को देख-देखकर जीती हूँ । हे लाल !
मैं तुम्हारे लिए छुहारा, दाख, खोपरा, खीरा, केला, आम, ईख का रस, शीरा, मधुर श्रीफल और चिरौंजी लाई हूँ । अमरूद, चिउरा, लाल खुबानी, घेवर-फेनी और सादी पूड़ी खोवा के साथ खाओ । मैं बलिहारी जाऊँ । गुझिया, लड्डू बनाकर और दही लाई हूँ । तुम्हें पूड़ी और अचार बहुत प्रिय हैं । इसके बाद पान बनाकर खिलाऊँगी । सूरदास कहते हैं कि मुझे पानखिलाई मिले ।



- * शीर्षक
- * रचनाकार
- केंद्रीय कल्पना
- * रस/अलंकार
- प्रतीक विधान
- * कल्पना
- पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव
- * कविता पसंद आने के कारण

इसके अतिरिक्त अन्य मुद्दे भी स्वीकार्य हैं।